प्रो० सुधीर कुमार सिंह, समाजशास्त्र विभाग
बी० ए० (आनर्स) खण्ड-III, प्रश्नपत्र - VI
ग्रामीण समाजशास्त्र
[illegible] महिला कालेज सिवान

भारत में ग्रामीण समाजशास्त्र की उत्पत्ति और विकास -

2011 की जनगणना प्रतिवेदन के अनुसार भारत की 68.8 प्रतिशत जनसंख्या 641 लाख गाँवों में निवास करती है। इसीलिए भारत को गाँवों का देश कहा जाता है भारत की प्राचीन सभ्यता और संस्कृति का आधार यहाँ के गाँव ही रहे हैं। हमारे प्राचीन धर्म ग्रंथों, वेदों, पुराणों, स्मृतियों एवं संहिताओं में ग्रामीण जीवन के विभिन्न पहलुओं पर विस्तार से चर्चा मिलती है रचनाकारों एवं कवियों ने ग्रामों की अपने साहित्य में प्रशंसा की है तथा उनकी स्वर्ग से तुलना की है। किन्तु पिछली दो शताब्दियों में कुछ ऐसी ~~महत्व~~ महत्वपूर्ण घटनाएं घटी जिससे गाँवों का प्राचीन स्वरूप बदल गया। औद्योगीकरण, नगरीकरण व यातायात के विकसित साधनों ने ग्रामीण जीवन को प्रभावित किया और आर्थिक दृष्टि से स्वावलम्बी गाँव परावलम्बी हो गये। सुसंगठित गाँवों में विघटन की प्रक्रिया प्रारम्भ हो गई, लोग नगरीय चमक एवं सुविधाओं की ओर आकर्षित

हुए और गाँव छोड़कर शहर की ओर पलायन होने लगे। गाँवों में गरीबी, बेकारी, ऋणग्रस्तता एवं कृषि से संबंधित अनेक समस्याओं ने जन्म लिया। अंग्रेजी शासन काल में गाँवों की बिगड़ती दशा पर कोई ध्यान नहीं दिया गया और गाँव की हालत बद से बदतर होती गयी। हम भारत में ग्रामीण समाजशास्त्र के विकास को दो भागों में बाँट सकते हैं।

(A) स्वतंत्रता से पूर्व भारत में ग्रामीण समाजशास्त्र का विकास — भारत में अंग्रेजी शासन के दौरान 19वीं सदी में ग्रामीण जीवन से संबंधित कुछ अध्ययन हुए जिनका उद्देश्य ग्रामीण पुनर्निर्माण, सुधार या कल्याण करना नहीं अपितु राजनैतिक लाभ प्राप्त करना था इन अध्ययनों का एक लाभ यह अवश्य हुआ कि इनके द्वारा स्थापित मान्यताओं ने आगे होने वाले अध्ययनों का मार्गदर्शन किया और ग्रामीण अध्ययन की रूपरेखा प्रस्तुत की विलियम हेनेटर द्वारा

प्रकाशित पुस्तक 'इण्डियन रीक्रिएशन' सन 1803 में लिखी जो ग्रामीण पारिवारिक एवं आर्थिक जीवन का विवरण देती है। वैज्ञानिक अध्ययन की दृष्टि से यह पुस्तक चाहे अपूर्ण ही थी लेकिन प्रारम्भिक प्रयत्न के रूप में यह एक उपयोगी दस्तावेज था। सन् 1860 में सर हेनरीमेन की 'एन्शियन्ट लॉ' नामक पुस्तक प्रकाशित हुई जिसमें भारतीय गाँवों की सामाजिक-आर्थिक संस्थाओं एवं कृषि व्यवस्था पर प्रकाश डाला गया। भारत में प्रारम्भिक ग्रामीण अध्ययन-कर्ताओं में गिलबर्ट स्लेटर, हैरल्ड एच० मैन तथा चार्ल्स ट्रेव-लिन के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं इनके विश्वसनीय अध्ययनों के कारण ही इन्हें भारतीय ~~ग्रामीण~~ ग्रामीण का जनक-दाता माना जाता है।